Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

Notes For. B.A - Part - III, Paper - 5

Topic - प्लासी का युद्ध (1757) - प्लासी युद्ध के निम्नलिखित कारण व परिणाम थे :—

(i) 1717 ई० में अंग्रेजो ने मुगल फरमान की गलत व्याख्या की एवं दस्तक का गलत उपयोग किया गया।

(ii) सिराजुद्दौला, जो बंगाल का नया नवाब बना, एक जवान एवं कठोर शासक था। वह अपने पूर्वजो के समान ही अंग्रेजो पर अधिकार रखना चाहता था। लेकिन दक्षिण भारत में अपनी सफलता के बाद अपने को शक्तिशाली समझने लगा, परंतु अपने अधिकारो का विरोध नही कर सका।

(iii) नवाब के आदेश के विरुद्ध अंग्रेजों ने कलकत्ता में किलेबंदी की।

प्लासी जो कि 'पलसी' अपभ्रंश है, मुर्शिदाबाद से 20 मील दूर तक गांव और परगना का नाम है। 23 June 1757 ई० में नवाब सिराजुद्दौला एवं अंग्रेजों के बीच लड़ाई हुए। ब्रिटिश सेना का नेतृत्व रॉबर्ट क्लाइव कर रहा था जिसमें 613 यूरोपियन, पैदल सैनिक, 1000 यूरोपीयन सिपाही, 171 तोपखाने एवं 21,00 भारतीय पैदल सैनिक थे। इधर नवाब के पास 35000 पैदल सैनिक, 15000 घुड़सवार, 53 तोपखाने थे, जिसे चलाने के लिए 40 से 50 फ्रांसीसी थे। अंग्रेजो के कुल 52 सिपाही एवं 20 यूरोपियन मारे गए, जबकि नवाब की तरफ से 500 लोग मारे गए थे। हानियां महत्वहीन है।

→ अंग्रेजों की विजय का कारण उनकी चुस्ती एवं फुर्ती के साथ-साथ उनके द्वारा किए गए अनेक षड्यंत्र एवं धोखाधड़ी भी, जिसके चलते उन्होंने शत्रु खेमें के अनेक लोगों को अपने साथ मिला लिया था। सिर्फ दो सेनापति मीर-मरदान तथा मोहनलाल ने ईमानदारी से युद्ध लड़ा। जबकि तीन अन्य सेनापति मीर-जाफर, यार लुतुफ खान तथा रायदुर्लभ जो कि अंग्रेजों के साथ षड्यंत्र में लिप्त थे, मूक दर्शक बने रहें।

महत्व एवं परिणाम:-

(i) अंग्रेजों का बंगाल एवं अंतत: सम्पूर्ण भारत पर अपना अधिकार करना आसान हो गया।
(ii) अंग्रेजों की प्रतिष्ठा बढ़ी, जिसके कारण वे भारतीय साम्राज्य के प्रबल प्रत्याशी बन गए।
(iii) बंगाल के लोगों से कम्पनी एवं उसके सेवकों द्वारा अवैध धन वसूलने में मदद मिली।
(iv) भारत में पूंजी का दोहन अर्थात् अंग्रेजों द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था का शोषण प्रारंभ हो गया।